International Journal of Engineering, Management and Humanities (IJEMH)
Volume 5, Issue 5, Sep.-Oct, 2024 pp: 280-287ISSN: 2584-2145www.ijemh.com

वैदिक कालीन शिक्षा में गुरुकुल शिक्षण व्यवस्था एवं वर्तमान में शिक्षण संस्थाओं की स्थिति का अध्ययन।

Dr. Mamta Joshi
B.S.M. Women B.Ed. College, Roorkee
Uttarakhand

Date of Submission: 14-09-2024 Date of Acceptance: 02-10-2024

परिचय

वैदिक काल में गुरुकुल प्रणाली शिक्षा के सर्वोत्कृष्ट रूप का प्रतिनिधित्व करती थी, जहाँ छात्र अपने गुरु के साथ आवासीय व्यवस्था में रहते थे। इस प्रणाली ने शिक्षा के लिए एक समग्र दृष्टिकोण पर जोर दिया, जिसमें न केवल अकादमिक शिक्षा बल्कि नैतिक मूल्य, जीवन कौशल और व्यावहारिक ज्ञान भी शामिल था। शिक्षा मुख्य रूप से मौखिक थी, जो वेदों जैसे पवित्र ग्रंथों के स्मरण और पाठ पर केंद्रित थी, चर्चाओं और बहसों के माध्यम से गहरी समझ को बढ़ावा देती थी। प्रत्येक छात्र की शिक्षा उनकी क्षमताओं, रुचियों और सामाजिक भूमिकाओं के आधार पर व्यक्तिगत थी, जिसमें सैद्धांतिक ज्ञान को कृषि या शासन जैसे व्यावहारिक कौशल के साथ एकीकृत किया गया था। गुरुकुल प्रणाली ने नैतिक और नैतिक मूल्यों पर बहुत जोर दिया, कर्तव्य (धर्म) और सामाजिक जिम्मेदारियों के सिद्धांतों को स्थापित किया। इसके विपरीत, आज की आधुनिक शिक्षा में विविध शिक्षण पद्धतियाँ, तकनीकी प्रगति, मानकीकृत पाठ्यक्रम और आलोचनात्मक सोच और रचनात्मकता पर जोर दिया गया है। इसका उद्देश्य समावेशी होना है, छात्रों की एक विस्तृत श्रृंखला की जरूरतों को पूरा करना है और साथ ही सीखने और व्यक्तिगत विकास के लिए समान अवसर प्रदान करना है।

भारत में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली एक प्राचीन आवासीय शिक्षा प्रणाली है जहाँ छात्र गुरुकुल, शिक्षक या 'आचार्य' के घर में रहते हैं और उनके मार्गदर्शन में शिक्षा, नैतिक मूल्य और जीवन कौशल प्राप्त करते हैं। यह प्रणाली जोर देती है

व्यावहारिक ज्ञान, समग्र विकास और पीढ़ी दर पीढ़ी ज्ञान और संस्कृति का हस्तांतरण। छात्रों को वैदिक साहित्य, संस्कृत, गणित और अन्य पारंपरिक भारतीय विज्ञान जैसे विषय पढ़ाए जाते हैं, और यह प्रणाली छात्र के समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित करती है, जिसमें व्यक्तित्व विकास, आध्यात्मिक जागृति और आत्म-नियंत्रण शामिल है। गुरुकुल प्रणाली व्यक्तिगत ध्यान, अनुशासन और शैक्षणिक और पाठ्येतर गतिविधियों के संयोजन पर जोर देने के लिए जानी जाती है। हालाँकि पारंपरिक गुरुकुल प्रणाली समकालीन समाज में व्यापक रूप से प्रचलित नहीं है, लेकिन यह समग्र विकास और अनूठी विशेषताओं (डी. जोशी, 2021; सेल्वमनी, 2019; सोनी और त्रिवेदी, 2018) पर अपने ध्यान के कारण आधुनिक शिक्षा प्रणालियों को प्रेरित करना जारी रखती है।

गुरुकुल प्रणाली ने आधुनिक भारतीय शिक्षा को कई तरह से प्रभावित किया है। यह प्राकृतिक वातावरण में सीखने, समग्र विकास और खेल, योग और कला जैसी पाठ्येतर गतिविधियों के महत्व पर जोर देती है, जिन्हें अब एक अच्छी शिक्षा के अभिन्न अंग के रूप में मान्यता दी गई है (फ्रेडरिक, 2016; ए. जोशी और गुप्ता, 2017)।

यह प्रणाली व्यक्तिगत ध्यान और व्यावहारिक ज्ञान पर भी ध्यान केंद्रित करती है, जो ऐसे पहलू हैं जिन्हें आधुनिक शिक्षा प्रणाली लागू करने का लक्ष्य रखती है। इसके अतिरिक्त, गुरुकुल प्रणाली का छात्र-शिक्षक संबंधों पर जोर आपसी सम्मान और अनुभवात्मक शिक्षा पर आधारित है जिसने आधुनिक शैक्षिक प्रथाओं को प्रेरित किया है। हालाँकि पारंपरिक गुरुकुल प्रणाली आज व्यापक रूप से प्रचलित नहीं है, लेकिन इसके सिद्धांत भारत और उसके बाहर आधुनिक शिक्षा प्रणालियों को प्रेरित करते हैं।

विकास के दौर में कई शिक्षा प्रणालियाँ भारत में प्रवेश कर रही हैं, जिनमें बाहर से आने वाली नई प्रणालियाँ शामिल हैं, उदाहरण के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 जिसमें शिक्षा में कई महत्वपूर्ण बदलाव शामिल हैं। NEP 2020 शिक्षा, छात्रों के सशक्तिकरण और परीक्षा के दबाव को कम करने के लिए समग्र दृष्टिकोण पर जोर देता है। ऐसी स्थिति में गुरुकुल प्रणाली को विकास और युग की जरूरतों के साथ निरंतर प्रासंगिक बने रहने के लिए समायोजन और अद्यतन की आवश्यकता है।

सेल्वमनी (2019) जैसे पूर्व शोधकर्ताओं द्वारा किए गए कई अध्ययन परिणामों से यह पता चलता है कि भारतीय काल के प्राचीन गुरुकुल में अद्वितीय

International Journal of Engineering, Management and Humanities (IJEMH)
Volume 5, Issue 5, Sep.-Oct, 2024 pp: 280-287ISSN: 2584-2145www.ijemh.com

विशेषताएं और गुण हैं जो प्राचीन शिक्षा प्रणाली में नहीं पाए जाते हैं। यद्यपि इसकी प्रकृति प्राचीन और आदिम है, परंतु भारत में प्रणाली गुरुकुल शिक्षा अपने आप में अद्वितीय चरित्र रखती है। फिर ए. जोशी और गुप्ता (2017) द्वारा किए गए शोध के परिणाम बताते हैं कि गुरुकुल प्रणाली स्वस्थ और सावधान दूसरी दुनिया की ओर जाने का मार्ग है। हमें इस दृष्टि से आगे बढ़ना चाहिए कि युवा और बढ़ती पीढ़ी को समग्र शिक्षा के माध्यम से नैतिक, सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा दी जाए। सोनी और त्रिवेदी (2018) द्वारा किए गए अध्ययन परिणामों से यह भी पुष्ट होता है कि छात्र यहां विभिन्न कौशल सीखते हैं जैसे संगीत, कला, आत्मरक्षा, कृषि, गाय पालना, विभिन्न अर्क (पशुओं के मूत्र से अर्क) तैयार करना,

गुरुकुल प्रणाली का आधुनिक शिक्षा प्रणाली से परिचय और तुलना पर।
हालाँकि इस अध्ययन में आंतरिक गुरुकुल प्रणाली की प्रासंगिकता पर चर्चा करने का प्रयास किया गया हैअध्ययन क्षेत्र के माध्यम से सीधे क्षेत्र में कार्यान्वयन जो गुरुकुल प्रणाली को लागू करने वाले स्कूलों में शिक्षकों से जानकारी लेता है। यह मामला महत्वपूर्ण है क्योंकि क्षेत्र में स्थिति वास्तविक स्थितियों का वर्णन करती है _ इस प्रणाली का कार्यान्वयन अभी भी कैसे चल रहा है और कैसे जारी रखना है और गतिशील ज्ञान शिक्षा से भी अनुकूलन करना है। अध्ययन का उद्देश्य यह है कि अध्ययन का उद्देश्य इस आधुनिक युग में भारत के स्कूलों में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के विकास के साथ-साथ इसकी प्रासंगिकता को जानना है।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का अवलोकन

परिभाषाका *गुरुकुल शिक्षा प्रणाली*गुरुकुल एक आवासीय विद्यालय प्रणाली है जहां छात्र शिक्षा प्राप्त करने के लिए अपने गुरु (शिक्षक) के साथ रहते थे।

संक्षिप्त इतिहासप्राचीन भारत में गुरुकुलों की उपस्थिति: गुरुकुलों का इतिहास वैदिक काल से है और उन्होंने ज्ञान प्रदान करने और सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

गुरुकुल शिक्षा का महत्व

मूल्यों और सिद्धांतों पर जोर दिया गया*गुरुकुल शिक्षा*गुरुकुलों का ध्यान विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों, आचार-विचार और सामुदायिक भावना को विकसित करने पर केन्द्रित था।

गुरुकुलों की भूमिका*समाज और संस्कृति को आकार देना*गुरुकुल प्रणाली ने व्यक्तियों के समग्र विकास में योगदान दिया और जिम्मेदार नागरिक तैयार किए।

गुरुकुल शिक्षा का विकास और पतन

गुरुकुलों के विकास में सहायक कारक: सामाजिक आवश्यकताओं में परिवर्तन और शैक्षिक विधियों में उन्नति ने गुरुकुल शिक्षा के परिवर्तन को प्रभावित किया।
गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के पतन के कारण: आधुनिक शिक्षण संस्थानों के आगमन के साथ, पारंपरिक गुरुकुल प्रणाली धीरे-धीरे कम हो गई।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के घटक

I. गुरुकुल शिक्षा की संरचना

गुरुकुलों में छात्र-शिक्षक संबंध
*भारत में गुरु-शिष्य संबंध*गुरुकुल शिक्षा की आधारशिला थी
गुरु ने एक मार्गदर्शक, मार्गदर्शक और आध्यात्मिक अधिकारी के रूप में बहुमुखी भूमिका निभाई

गुरुकुलों में पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रम और विषय
वैदिक शिक्षा प्रणाली पर आधारित गुरुकुल समग्र शिक्षा पर केंद्रित थे
वेद, शास्त्र, दर्शन, कला और युद्ध जैसे विषयों पर जोर

II. गुरुकुल शिक्षा में शिक्षण पद्धतियाँ

अनुभवात्मक शिक्षा और व्यावहारिक ज्ञान पर ध्यान केंद्रित करें
*अनुभवात्मक शिक्षा के लाभ*गुरुकुल शिक्षाशास्त्र के केंद्र में थे
छात्रों ने अवलोकन, भागीदारी और व्यावहारिक अनुभव के माध्यम से सीखा
शिक्षण में कहानी सुनाने, वाद-विवाद और चर्चाओं का उपयोग
*भारतीय शिक्षा में कहानी कहने की भूमिका*समृद्ध शिक्षण अनुभव
वाद-विवाद और चर्चाओं ने आलोचनात्मक सोच और बौद्धिक विकास को प्रोत्साहित किया

III. गुरुकुल में दैनिक जीवन

छात्रों और शिक्षकों की दैनिक दिनचर्या
गुरुकुल का जीवन एक संरचित दैनिक कार्यक्रम के इर्द-गिर्द घूमता था

International Journal of Engineering, Management and Humanities (IJEMH)
Volume 5, Issue 5, Sep.-Oct, 2024 pp: 280-287ISSN: 2584-2145www.ijemh.com

छात्र सुबह की दिनचर्या, अध्ययन, शारीरिक गतिविधियों और आत्मचिंतन में व्यस्त रहते हैं

गुरुकुल में अनुशासन और अनुष्ठान का महत्व
अनुशासन ने समय की पाबंदी, सम्मान और आत्म-अनुशासन के मूल्यों को स्थापित किया
अनुष्ठानों ने छात्रों को सांस्कृतिक और आध्यात्मिक प्रथाओं से जोड़ा

चतुर्थ. गुरुकुल शिक्षा में गुरु की भूमिका
गुरुकुल प्रणाली में गुरु का महत्व
*हिंदू धर्म में गुरु का महत्व*शैक्षणिक मार्गदर्शन से परे विस्तारित
गुरुओं ने विद्यार्थियों को नैतिक मूल्य, नैतिक सिद्धांत और जीवन कौशल प्रदान किए

गुरु-शिष्य परम्परा और उसका प्रभाव
*भारतीय संस्कृति में गुरुकुल की विरासत*यह गुरु-शिष्य परंपरा से उपजा है
गुरु-शिष्य संबंध ने श्रद्धा, निष्ठा और ज्ञान हस्तांतरण की गहरी भावना को बढ़ावा दिया

क्रियाविधि

गुरुकुल प्रणाली में कौन से विषय पढ़ाए जाते हैं
प्राचीन भारत में गुरुकुल प्रणाली में विभिन्न विषयों को पढ़ाया जाता था, जिनमें खगोल विज्ञान, चिकित्सा, दर्शन, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, धर्म, योग, शारीरिक शिक्षा, रक्षा अध्ययन, वैदिक साहित्य, संस्कृत, गणित और अन्य पारंपरिक भारतीय विज्ञान शामिल थे। यह प्रणाली व्यावहारिक ज्ञान, समग्र विकास और पीढ़ी से पीढ़ी तक ज्ञान और संस्कृति को आगे बढ़ाने पर जोर देती है। शैक्षणिक विषयों के अलावा, गुरुकुल प्रणाली खेल, योग और कला जैसी पाठ्येतर गतिविधियों पर भी ध्यान केंद्रित करती है, जिन्हें एक अच्छी शिक्षा का अभिन्न अंग माना जाता है। यह प्रणाली शिक्षकों पर बहुत अधिक निर्भर करती है, जो पाठ्यक्रम, वितरण विधियों और मूल्यांकन के लिए जिम्मेदार होते हैं। सीखना प्रत्येक छात्र की जरूरतों के अनुरूप होता है न कि सामान्य पाठ्यक्रम के अनुसार। व्यक्तिगत ध्यान, व्यावहारिक ज्ञान और समग्र विकास पर गुरुकुल प्रणाली के जोर ने भारत और उसके बाहर आधुनिक शिक्षा प्रणाली को प्रेरित किया है (पटेल, एनडी; रावत, एनडी)।

गुरुकुल प्रणाली में समूह चर्चा की भूमिका
गुरुकुल प्रणाली में समूह चर्चा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि समूह चर्चा छात्रों के लिए एक-दूसरे से सीखने और आलोचनात्मक सोच, व्यावहारिक ज्ञान और विश्लेषणात्मक समझ में संलग्न होने का एक साधन है। गुरुकुल प्रणाली में समूह चर्चा के कुछ महत्वपूर्ण पहलू इस प्रकार हैं: 1) शिक्षक आमतौर पर छात्रों के साथ आमने-सामने बातचीत करते हैं, और समूह चर्चा भी सीखने की प्रक्रिया में एक सामान्य विशेषता है; 2) छात्रों की आयु के आधार पर गुरुकुल प्रणाली को तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया है: वासु (24 वर्ष तक के छात्रों के लिए), रुद्र (36 वर्ष तक के छात्रों के लिए), और आदित्य (36 वर्ष तक के छात्रों के लिए)। यह संरचना समूह चर्चा और आयु-उपयुक्त शिक्षण गतिविधियों की अनुमति देती है; 3) समूह चर्चा वह साधन है जिसके माध्यम से छात्रों को भाषा, विज्ञान और गणित जैसे विषयों में महत्वपूर्ण शिक्षा दी जाती हैइन मूल्यों को विकसित करने में चर्चाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं (भट्टाचार्य एवं सचदेव, एन.डी.; शेली, 2015)।
अपने शैक्षिक दृष्टिकोण में समूह चर्चा को शामिल करके, गुरुकुल प्रणाली छात्रों को सक्रिय शिक्षण, आलोचनात्मक चिंतन और महत्वपूर्ण जीवन कौशल के विकास में संलग्न होने के लिए प्रोत्साहित करती है।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के लाभ
प्राचीन भारत की गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ने कई लाभ प्रदान किए, जिनमें से कुछ आज भी प्रासंगिक हैं। इनमें शामिल हैं: १) समग्र विकास, गुरुकुल प्रणाली छात्र के समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित करती है, जिसमें व्यक्तित्व विकास, आध्यात्मिक जागृति और पीढ़ी-दर-पीढ़ी ज्ञान और संस्कृति का हस्तांतरण शामिल है; २) व्यावहारिक ज्ञान पर जोर, यह लागू ज्ञान पर ध्यान केंद्रित करती है और छात्रों को जीवन के सभी क्षेत्रों के लिए तैयार करती है, एक ऐसी शिक्षा प्रदान करती है जो सीखने के लिए अनुकूल है और इसका कोई हानिकारक प्रभाव नहीं है; ३) स्वस्थ प्रतिस्पर्धा और तनाव कम करता है, यह प्रणाली स्वस्थ प्रतिस्पर्धा प्रदान करती है और बच्चों में तनाव के स्तर को कम करती है; ४) छात्र-शिक्षक संबंध, यह एक मजबूत शिक्षक-छात्र संबंध बनाता है, सम्मान, अनुशासन और व्यक्तिगत ध्यान को बढ़ावा देता है; ५) पाठ्येतर गतिविधियाँ, गुरुकुल प्रणाली खेल, योग और कला जैसी पाठ्येतर गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करती है 7) आध्यात्मिक और नैतिक प्रशिक्षण, एक प्रणाली जो आध्यात्मिकता, आत्म-अनुशासन, अच्छे शिष्टाचार और मानवतावाद को जोड़ती है, इसका उद्देश्य छात्रों को

International Journal of Engineering, Management and Humanities (IJEMH)
Volume 5, Issue 5, Sep.-Oct, 2024 pp: 280-287ISSN: 2584-2145www.ijemh.com

भविष्य में प्रबुद्ध व्यक्ति बनने में मदद करना है (बिरला, 2015; शनवाल और फातमी, 2015)।
गुरुकुल प्रणाली में समग्र विकास, व्यावहारिक ज्ञान और छात्र-शिक्षक संबंधों पर जोर दिया जाता है, जिसकी सराहना की जाती है और इसके सिद्धांतों ने आधुनिक शिक्षा प्रणालियों को प्रेरित किया है।

भारत का प्राचीन इतिहास देश की समृद्ध पारंपरिक और सांस्कृतिक विरासत की कहानी कहता है। अतीत की सबसे प्रसिद्ध परंपराओं में से एक अद्वितीय गुरुकुल शिक्षा प्रणाली थी।

गुरुकुल या गुरुकुलम शब्द दो शब्दों का संयोजन है, गुरु अर्थात शिक्षक और कुल अर्थात परिवार या घर।

इस प्रकार, गुरुकुल शब्द का अनुवाद 'शिक्षक का घर' होता है। गुरुकुल वास्तव में यही था - विद्यार्थियों या शिष्यों के लिए सीखने और ज्ञान प्राप्त करने का घर।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का सबसे पहला उल्लेख वेदों और उपनिषदों में मिलता है। यह शिक्षा प्रणाली प्राचीन काल से ही अस्तित्व में थी।

उपनिषदों में वर्तमान गुड़गांव शहर में द्रोणाचार्य के गुरुकुल का उल्लेख है।

प्राचीन काल के कई विद्वानों और यात्रियों ने इसकी प्रशंसा में अनेक पुस्तकें लिखीं।भारत में प्रचलित शिक्षा प्रणालीसमय के दौरान।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ब्रिटिश विचारधारा के आगमन तक दक्षिण एशिया में सबसे प्रारंभिक शिक्षा प्रणालियों में से एक थी।

गुरुकुल प्रणाली की विशिष्ट विशेषताएँ

1. स्रोत

गुरुकुल प्रणाली के तहत दी जाने वाली शिक्षा उस समय की सांस्कृतिक और धार्मिक प्रथाओं से अत्यधिक प्रभावित थी।

चूंकि यह शिक्षा प्रणाली वैदिक काल के दौरान विकसित हुई थी, इसलिए शिक्षण का मुख्य स्रोत वेद, पुराण और अन्य धार्मिक ग्रंथ थे।

ये पाठ विद्यार्थियों के सीखने और कार्य करने के तरीके के लिए एक मॉडल या मानक के रूप में कार्य करते हैं।

2. फोकस

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में शिष्यों के सर्वांगीण विकास को महत्व दिया जाता था।

विद्यार्थियों को न केवल प्राचीन ग्रंथों के माध्यम से सिद्धांत पढ़ाया गया, बल्कि शारीरिक फिटनेस का प्रशिक्षण भी दिया गया और दैनिक जीवन का प्रबंधन करना भी सिखाया गया।

छात्रों को दैनिक कार्य करने और गायन, नृत्य, शिल्प, खेल जैसी गतिविधियों में शामिल होने के लिए कहा गया।योगइससे गुरुकुल में विद्यार्थियों का समग्र विकास सुनिश्चित हुआ।

3. गुरुदक्षिणा

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की मुख्य विशेषताओं में से एक गुरुदक्षिणा की अवधारणा या गुरु के प्रति सम्मान का प्रतीक है। यह शिक्षक के प्रति कृतज्ञता और सम्मान की स्वीकृति के रूप में कार्य करता है।

प्राचीन काल में गुरुदक्षिणा के कई रूप होते थे। यह एक मौद्रिक टोकन या वस्तु के रूप में एक टोकन हो सकता है। कई बार गुरु शिष्य से गुरुदक्षिणा के रूप में कुछ कार्य करने के लिए कह सकते हैं।

इस शिक्षा प्रणाली का एक अनूठा तत्व यह था कि गुरुकुल में अध्ययन के दौरान विद्यार्थियों को अपना जीवन निर्वाह करने के लिए आस-पास के गांवों के घरों से भिक्षा मांगनी पड़ती थी।

भिक्षा मांगने की इस प्रथा ने छात्रों को विनम्र और आदरपूर्ण होना सिखाया।

International Journal of Engineering, Management and Humanities (IJEMH)
Volume 5, Issue 5, Sep.-Oct, 2024 pp: 280-287ISSN: 2584-2145www.ijemh.com

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली वास्तव में क्या है?

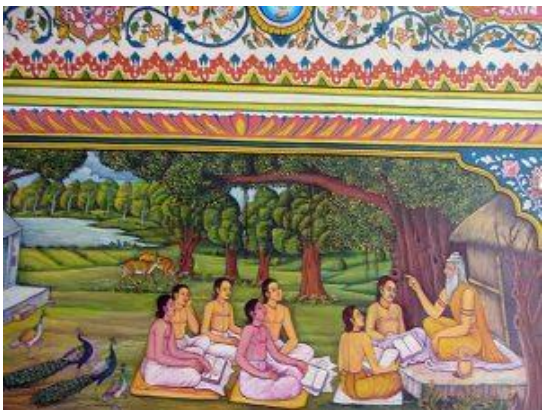

वैदिक काल में शिक्षा की गुरुकुल प्रणाली आवासीय प्रकार की स्कूली शिक्षा को संदर्भित करती थी, जहाँ शिष्य गुरु के घर में या उसके निकट रहते थे और शिक्षक से ज्ञान प्राप्त करते थे।

गुरुकुल में न केवल विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्त होता था, बल्कि जीवन जीने का तरीका भी सिखाया जाता था। गुरुकुल में सभी को समान माना जाता था।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में पढ़ाए जाने वाले विषय

यह गलत धारणा है कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में केवल वेद और उपनिषद ही विषय के रूप में पढ़ाए जाते थे। यह प्रणाली एक व्यापक और सर्वव्यापी शिक्षा प्रणाली थी।

इसमें छात्रों के समग्र विकास को शामिल किया गया। छात्रों के नैतिक, शारीरिक और आध्यात्मिक कल्याण पर ध्यान केंद्रित किया गया।

गुरुकुलों में जीवन के सभी पहलुओं को पढ़ाया जाता था, चाहे वह शारीरिक हो या मानसिक। छात्रों को प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व की शिक्षा दी जाती थी।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में पढ़ाए जाने वाले कुछ विषय हैं

- गणित और गणित के मूल सिद्धांत
- विज्ञान
- खगोल
- बोली
- प्रारंभिक चिकित्सा

प्राचीन शिक्षा प्रणाली में इन्हें विषय के रूप में पढ़ाया जाता था, इसलिए आप सोच रहे होंगे कि शिक्षक कहाँ से पढ़ाते थे और विद्यार्थी कहाँ से सीखते थे, इसकी जानकारी कहाँ से मिलती थी।

आज की तरह, छात्रों के पास संदर्भ के लिए पाठ्यपुस्तकें हैं, प्राचीन गुरुकुल प्रणाली भी वेदों, उपनिषदों, धर्मसूत्रों और ब्राह्मणों जैसे प्राचीन ग्रंथों पर निर्भर थी।

सीखने के कुछ अन्य स्रोत आर्यभट्ट और पतंजलि जैसे प्रसिद्ध विद्वानों की रचनाएँ थीं। प्राचीन काल में शिक्षक का अंतर्निहित ज्ञान और अनुभव सीखने के कुछ स्रोत थे।

गणित और विभिन्न विज्ञानों के ज्ञान के अलावा, शिष्यों को योग, व्यायाम, शारीरिक श्रम, खेल, तीरंदाजी, मार्शल आर्ट और खेलों का प्रशिक्षण दिया जाता था।

Theदिनचर्यागुरुकुलों में अपनाई जाने वाली शिक्षा पद्धति कठोर थी। छात्र एक निश्चित समय-सारिणी का पालन करते थे। इससे यह सुनिश्चित होता था किअनुशासनसभी छात्रों के जीवन में नियमन और विनियमन।

छात्रों को पढ़ाया गयासमाज की जिम्मेदारियाँ.

गुरुकुल में एक सामान्य दिन सूर्योदय के समय शुरू होता था और इसमें सफाई, खाना पकाना और शारीरिक फिटनेस जैसे काम शामिल होते थे।

शिष्यों को न केवल ग्रंथों की अवधारणाएं सिखाई गईं, बल्कि उन्हें नियमित गतिविधियों में भी प्रशिक्षित किया गया, जिससे दैनिक आधार पर जीविका को बढ़ावा मिला।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत छात्रों को मूल विषयों के अलावा जीवन जीने का तरीका भी सिखाया जाता था।

शिष्य अपने गुरुओं की तरह सादगीपूर्ण और सादगीपूर्ण जीवन व्यतीत करते थे। उनसे अपेक्षा की जाती थी कि वे गुरुओं की आज्ञा का पालन बड़े आदर और श्रद्धा के साथ करें।

इसलिए, यह कहना सही होगा कि प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली एक जीवन पद्धति थी।

वैदिक काल में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली

यद्यपि प्राचीन शिक्षा प्रणाली के दौरान वेद और उपनिषद जैसे प्राचीन ग्रंथ शिक्षा के स्रोत थे, लेकिन यह नहीं कहा जा सकता कि गुरुकुलों में केवल वेद ही पढ़ाए जाते थे।

International Journal of Engineering, Management and Humanities (IJEMH)
Volume 5, Issue 5, Sep.-Oct, 2024 pp: 280-287ISSN: 2584-2145www.ijemh.com

यह तथ्य कि मुगल शासन के दौरान गुरुकुल अस्तित्व में थे और फले-फूले, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के समावेशी चरित्र को दर्शाता है।

इस शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य समग्र व्यक्तित्व विकास औरचरित्र निर्माण.

छात्र शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए काम करते थे। छात्रों को सिखाया जाता था कि समाज में एक दूसरे के साथ कैसे रहना है। शिक्षकों ने निगरानी की औरदेखाछात्रों का व्यवहार।

वैदिक काल में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में भी कौशल निर्माण पर जोर दिया जाता था। छात्रों को मिट्टी के बर्तन बनाना, खाना बनाना, सफाई करना और अन्य कलाएँ सिखाई जाती थीं।

आपको यह भी पसंद आ सकता हैंजीवन में शिक्षा का महत्व

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के दौरान सीखने के तरीके

प्रभावी शिक्षण सुनिश्चित करने के लिए गुरुकुलों के विद्यार्थियों को प्रतिदिन वेदों और अन्य प्राचीन ग्रंथों का पाठ करना पड़ता था। इससे ग्रंथों के महत्वपूर्ण भागों को याद रखने की गारंटी मिलती थी।

गुरुकुल में छात्रों को गायन के अलावा व्यावहारिक शिक्षा भी मिलती थी। वे खाना बनाते थे, साफ-सफाई करते थे औरकुछ कौशल में संलग्न होना.

वाद-विवादइस अवधि के दौरान अज्ञात नहीं थे। छात्रों ने कुछ विषयों पर विचार-विमर्श और चर्चा की। विद्यार्थियों को विश्लेषण करना था और उन्हें लागू करना थामहत्वपूर्ण सोचविषय-वस्तु पर

गुरुकुलों में प्रवेश की प्रक्रिया

गुरुकुल में प्रवेश तब संभव था जब छात्र का उपनयन संस्कार हो चुका होता था। यह आमतौर पर 8 से 12 वर्ष की आयु में होता था।

इसके बाद, छात्र गुरुकुल में रहने के लिए पात्र हो जाते थे। छात्र आमतौर पर लगभग 10 से 12 साल तक शिक्षा प्राप्त करते थे।

गुरुकुल से आगे की शिक्षा

गुरुकुलों का विस्तारित भाग ही वह था जिसे हम आधुनिक विश्वविद्यालय कहेंगे।

हमारे कुछ ग्रंथों में तक्षशिला, नालंदा और विक्रमशिला जैसे प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों के बारे में जानकारी है। ये उन्नत शिक्षा के केंद्र थे।

तक्षशिला के प्रसिद्ध शिष्यों में से एक थे प्रसिद्ध व्याकरणविद पाणिनी। वे भाषा और व्याकरण के विशेषज्ञ बन गए और उन्होंने प्रसिद्ध पुस्तक अष्टाध्यायी लिखी।

तक्षशिला के खंडहरों की खुदाई 19वीं शताब्दी के मध्य में पाकिस्तान के उत्तर-पश्चिमी भाग में की गई थी। यह अब यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल है।

International Journal of Engineering, Management and Humanities (IJEMH)
Volume 5, Issue 5, Sep.-Oct, 2024 pp: 280-287ISSN: 2584-2145www.ijemh.com

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली – पवित्र और आदरणीय

प्राचीन काल में शिक्षा को पवित्र माना जाता था। यह एक पूजनीय और आदरणीय क्षेत्र था। इसकी पूजा के कारण छात्रों से कोई निश्चित शुल्क नहीं लिया जाता था।

गुरु से प्राप्त ज्ञान के बदले में शिष्य गुरु को गुरु दक्षिणा देते थे। यह अध्ययन की अवधि पूरी करने पर एक छात्र की ओर से शिक्षक के प्रति सम्मान का प्रतीक था।

यह गुरु दक्षिणा धन के रूप में हो सकती है या कोई निश्चित कार्य जिसे शिक्षक अपने शिष्य से पूरा करवाना चाहता है।

गुरु दक्षिणा की बात करें तो महाकाव्य महाभारत में एक रोचक कथा आती है, जिसमें एकलव्य नामक एक जंगली जनजाति का युवा राजकुमार बताया गया है।

इस कथा में द्रोण एकलव्य से गुरुदक्षिणा के रूप में उसका दाहिना अंगूठा मांगते हैं। एकलव्य तुरंत अपना दाहिना अंगूठा काटकर गुरुदक्षिणा के रूप में दे देता है।

यह प्राचीन काल में शिक्षक और शिष्य के बीच पवित्र और आदरणीय रिश्ते को दर्शाता है।

उत्तर वैदिक काल में गुरुकुल प्रणाली

अंग्रेजों के आने से देश में शिक्षा का परिदृश्य बदल गया। गुरुकुल प्रणाली समाप्त हो गई। अंग्रेजों ने अपनी केंद्रीकृत शिक्षा प्रणाली शुरू की।

हालाँकि, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में तीव्र गिरावट और आधुनिक शिक्षा में इसके महत्व को समझते हुए, अग्रणी दयानंद सरस्वती और स्वामी श्रद्धानंद ने आधुनिक गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के पुनरुद्धार का नेतृत्व किया।

1886 में उन्होंने दयानंद एंग्लो-वैदिक पब्लिक स्कूल और यूनिवर्सिटी की स्थापना की। इस स्कूल ने लगभग भूली हुई प्राचीन शिक्षा प्रणाली को पुनर्जीवित किया।

धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से, स्कूल ने देश के विभिन्न भागों और यहां तक कि शेष विश्व में भी अपना विस्तार किया।

आज की शिक्षा व्यवस्था में प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की प्रासंगिकता को भुलाया नहीं जा सकता।

यद्यपि आधुनिकीकरण के साथ इस अवधारणा में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं, फिर भी गुरुकुल प्रणाली का मूल विषय आज भी कायम है।

आज भी छात्रों को पढ़ाने की अवधारणानैतिक मूल्यप्राचीन काल की भांति आज भी शिक्षा प्रणाली का अभिन्न अंग बना हुआ है।

समय के साथ लगभग भुला दी गई बात, आज स्कूल पाठ्यक्रम में शारीरिक फिटनेस की आवश्यकता को पुनर्जीवित कर रहे हैं। आजकल कई स्कूल छात्रों की खेल क्षमताओं के आधार पर भी दाखिला देते हैं।

प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की तरह अब भी छात्रों के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए उनके समग्र विकास पर जोर दिया जाता है।

आज की शिक्षा में गुरुकुल प्रणाली की एक और महत्वपूर्ण प्रासंगिकता गुरुदक्षिणा की अवधारणा है।

आज इसे कई अलग-अलग नामों से जाना जाता है, जैसे फीस या प्रतिफल, लेकिन गुरुदक्षिणा की अंतर्निहित अवधारणा वर्षों से एक ही रही है। आज की शिक्षा पर गुरुकुल प्रणाली का प्रभाव ऐसा ही है।

समापन विचार

यद्यपि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली लगभग भूली जा चुकी है, फिर भी यह शिक्षा की एक प्रभावी प्रणाली साबित हुई है। यह प्रणाली देश में अंग्रेजों के आगमन से पहले सैकड़ों वर्षों तक काम करती रही।

यह मुख्य रूप से प्रत्येक छात्र के समग्र विकास पर केंद्रित था। आधुनिक विद्वानों का मानना है कि आज के छात्रों में समग्र शारीरिक और मानसिक विकास का अभाव है।

प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को पुनर्जीवित करने से आज की शिक्षा पर अद्भुत प्रभाव पड़ेगा। आधुनिक शिक्षा और गुरुकुल शिक्षा का सही संतुलन एक दोषरहित शिक्षा प्रणाली होगी।

निष्कर्ष

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली, जिसकी शुरुआत वैदिक काल में प्राचीन भारत में हुई थी, आधुनिक समय में भी प्रासंगिक बनी हुई है। हालाँकि आज पारंपरिक गुरुकुल प्रणाली का व्यापक रूप से पालन नहीं किया जाता है, लेकिन आधुनिक शिक्षा प्रणाली पर इसका प्रभाव विभिन्न पहलुओं में देखा जा सकता है। गुरुकुल प्रणाली अनुभवात्मक शिक्षा, व्यावहारिक ज्ञान और समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित करने पर आधारित है। यह शिक्षा में नैतिकता, मूल्यों और आध्यात्मिकता के महत्व और मजबूत छात्र-शिक्षक संबंधों पर जोर देती है। इस प्रणाली ने आधुनिक शैक्षिक प्रथाओं को प्रेरित किया है, जैसे कि शैक्षणिक और पाठ्येतर गतिविधियों के संयोजन पर जोर, व्यक्तिगत शिक्षा और प्रौद्योगिकी का समावेश। गुरुकुल प्रणाली का जोर समग्र शिक्षा, व्यावहारिक ज्ञान और छात्र-शिक्षक संबंधों पर है।

दूसरों की तरह, इसकी सराहना की जाती है और इसके सिद्धांतों ने आधुनिक शिक्षा प्रणालियों को प्रेरित किया है। हालाँकि पारंपरिक गुरुकुल प्रणाली समय के साथ विकसित हुई है, लेकिन इसके मूल मूल्य और सिद्धांत डिजिटल युग में शिक्षा को प्रभावित करना जारी रखते हैं।

संदर्भ

1. अधिकारी, टीएन (2023)। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में समावेशिता।*ज्ञानज्योति,3*(1), 99–107.
2. भट्टाचार्य, एस., एवं सचदेव, बी.के. (एन.डी.)।*भारत में गुरुकुल प्रणाली बनाम आधुनिक शिक्षा-संकट को दूर करने के लिए दोनों प्रणालियों के एकीकरण की आवश्यकतासमाज की निरक्षरता, अर्थव्यवस्था और सामाजिक समस्याएं*6 जनवरी 2024 को पुनःप्राप्त, यहाँ सेhttps://www.researchgate.net/profile/Ce-Dr-Sumanta-
3. भट्टाचार्य/प्रकाशन/362124471_गुरुकुल_प्रणाली_बनाम_आधुनिक_शिक्षाभारत_में_कार्य_-दो_प्रणालियों_के_विलय_की_आवश्यकता_है_ताकि_संकट_को_समाप्त_किया_जा सके
4. _अशिक्षा_अर्थव्यवस्था_और_सामाजिक_Problems_of_the_Society/links/62d7858355922e121b7c9100/गुरुकुल-
5. भारत में व्यवस्था बनाम आधुनिक शिक्षा-एकीकरण की आवश्यकतानिरक्षरता-अर्थव्यवस्था-और-सामाजिक-समस्याओं-के-समाधान-के-लिए-दो-प्रणाली.pdf